Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-IX Sept. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

अंधा युग नाटक : एक अवलोकन

डॉ शिवानंद एच कोली
हिन्दी अनुवादक
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
गुलबर्गा– 585 311

अंधायुग मिथकीय काव्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसके माध्यम से लेखक ने महाभारत्तोर कालिन परिवेश को आधुनिक युग की दृष्टि से संप्रेत करने का अभूतपूर्व प्रयास किया है।

धर्मवीर भारती ने अपने कृति के प्रारंभ में लिखा है कि कृण्टा, निराशा, रक्तपात, प्रतिशोध विकृत्ति, कुरूपता अंधापन इनमें हिच–किचाना कथा इन्ही में तो सत्य के दुर्लभ कण छिपे हुए है तो इनमें कयों न निडर ढँसु इनमें ढँसकर भी मैं मर नहीं सकता। भारतीय पौराणिक, ऐतिहासिक संदर्भ में इस व्यापक सत्य को अभिव्यक्त किया है कि मानव की मोहाधंता, स्वार्थ, संकिर्णता और समाज निरपेक्ष व्यैक्तिक आंधी आशाओं, आस्थाओं, मर्यादाहीन और अनैतिक आचरण से ही विध्वंसकारी युद्ध का उद्य होता है। महाभारत के युद्ध में दोनों ही पक्षों ने किया गया मर्यादा का खंडन विवेक सुन्यता का परिचय दिया है। युद्ध मानव नीयती का सबसे बड़ा अभिशाप है, जिसमें जय पराजय दोनों का ही परिणाम घातक और निराशामय होता है। अंधायुग के परिवेश का निर्माण हासोन्मुख, युद्ध संस्कृति और उसकी भीषण परिणितियों के तंतुओं से हुआ है। युद्ध के समय जारी घोषणाओं के बावजूद धर्म या सत्य किसी भी पक्ष में अक्षुण्य नहीं रहा।

''धर्म किसी ओर नहीं था लेकिन
सभी अंधे प्रवृत्तियों से परिचालित।''

युद्धोन्माद के कारण व्यक्ति के धर्म नीति मर्यादा आदि सब आडम्बर मात्र प्रतित होने लगते हैं। युद्ध ग्रहस्थ विकृत मनस्थिति के कारण ही अंधायुग के प्रायः सभी पात्र किसी न किसी (अनुपात) रूप में मर्यादा भ्रष्ट और अनैतिक है। यहाँ तक की मानव भविष्य के संरक्षक कृष्ण भी इस मानवीय धरातल पर मर्यादा हीनता के आरोप से मुक्त नहीं है। भारती ने सत्य की खोज किसी दार्शनिक पौराणिक, धार्मिक दृष्टि से नहीं किया। उन्होंने अपने को युद्धग्रहस्थ, युध्वस्त, तटस्थ पात्रों की परिस्थितियों एवं मनस्थितियों में ढालकर मानवी वैज्ञानिक और रचनात्मक स्थर आत्मानुभूति के माध्यम से सत्य की उपलब्धी की है। उन्होंने पात्रों के मन में पैंटकर उनकी आंतरिक असंगती की उजागर किया है।

धर्मवीर भारती के अनुसार युद्ध की मूल उत्स भूमि मोहान्धता है। पारस्परिक घृणा प्रति हिंसा की उग्र भावना ही मानव की अंतर वृत्ति प्रवृत्तियों का हनन करके उसे बर्बर पशु बना देती है। युद्ध की इन विनाशकारी विघटनकारी संत्रासपूर्ण परिस्थितियों का संकट सभी को सहना पड़ता है फिर चाहे वे तटस्थ दृष्टा, संजय हो या तथा कथीत सत्य के पक्षय धर युयुत्स पक्षिय युद्ध की हासोन्मुखी परिस्थितियों में सत्य, दया, सहानुभूति के संचार के मार्ग अवरूद्ध हो जाते है और इन सदप्रवृत्तियों का अनुसरण करनेवालों को अंत में कुण्टित होकर आत्महत्या का मार्ग अपनाना पड़ता है। युद्ध जनीत अनास्था, अनैतिकता, कुण्टा, विसंगती विघटन आदि के बावजूद आस्था सत्य तथा मर्यादा के कुछ कण कहीं न कहीं रहते है। यहाँ विशेष उल्लेखनीय बात है कि भारती ने सत्य अनासकिता कर्म मर्यादा पर सत प्रवृत्तियों की स्थापना जहाँ गीता में युग, युग से चले जीवंत और मंगल विधायक अनास्कत कर्म योग के आधार पर की है। साथ ही उनकी दृष्टि के लिए बीच–बीच में आधुनिक तथा पाश्चात्य दर्शन अस्तित्ववाद का भी सहारा लिया है।

''जब कोई भी मनुष्य
अनास्कत होकर, देता चुनौती इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दशा बदल जाती है

नीयती नहीं है पूर्व निर्धारित उसका हरक्षण
मानव निर्णय बनता मिटता है।

अस्तित्ववाद के अनुसार मनुष्य कर्म ही अस्यित्व की सार्थकता प्रधान करता है। जब मनुष्य परिस्थितियों के कारण प्राताडीत होकर निशक्त रहने का अभिशक्त हो जाता है। तब वह निरर्थकता की बोध की पीड़ा से तिल मिलाकर संजय के शब्दों में विवशता पूर्वक कहा उठता है कि

''मुझसा निर्थक कौन होगा
अथवा
मैं हूँ निशिक्रिय निरपेक्षीत सत्य।''

अंधायुग में कृष्ण को व्यक्ति के अतिरिक्त एक मंगल विधायीनी, सार्वभौम सत्ता या चेतना के रूप में प्रतिष्टि किया गया है जो जीवन को सदगती की ओर प्रेरित करने वाले मर्यादायुक्त, आचरण नूतन सृजन आदि शिवमय तत्वों में बार–बार जीवीत एवं सक्रिय हो उठती है।

गांधारी, अश्वत्थामा आदि अशिव प्रेरित पात्र भी अंत में इसी प्रेरक मंगल चेतना का वरण करते है युयुत्स भी जो कृष्ण के व्यक्त्वि रूप का कटु आलोचक है, कृष्ण के प्रति उग्र अनास्थावादी होते हुए भी मानव भविष्य के प्रति आस्था व्यक्त करके प्रकारंतर से उसी मंगल सत्ता के प्रती आस्था व्यक्त करता है।

''नियती है हमारी बन्धी प्रभु के मरण से नहीं
मानव भविष्य से''

इस प्रकार युद्धजनीत अश्वि को अविकांत करके मानव भविष्य की रक्षा शिव सत्ता की ओर प्रेरित करना ही अंधायुग का उद्देश्य है अंधायुग में युद्ध के परिप्रेक्षित जीवन मूल्यों की खोज की गयी है। किन्तु संदर्भ, रागात्मक नहीं जीवन संघर्ष से जुड़े हुए है।

डॉ देवीप्रसाद गुप्ता के अनुसार ''हमारे युद्ध की सबसे बड़ी समस्या जीवन मूल्यों का संघर्ष है। इस संघर्ष का मूल कारण विघटनकारी शक्तियों का उदय तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप ध्वंश के भौतिकवादी मूल्यों की सर्वेपरी मान लिया है, इसके कारण स्वार्थ परायणता है प्रेम, करूणा, अहिंशा, सत्य आदि शास्वत जीवन मूल्यों का प्रायः लोप हो गया है, स्थिति यह है कि समस्त भौतिक उपलब्धियाँ के उपरांत भी आज के मानव का अंत परितप्त या तृष्ट नहीं है, उसमें अधिक से अत्याधिक से सर्वाधिक की कामना बड रही है इस घोर स्वार्थ संकुचित अंहवादी बना दिया है। मानव का यह अंह अतित के प्रति अनास्था बनकर आजागत के अनिश्चिय वर्तमान से असंतुष्ट है।

निष्कर्ष के रूप यह कहा जा सकता है कि अंधायुग नाटय काव्य कृति का नवीन भावबोध की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण कृति माना जाता है, अंधायुग युग में जीवन के युगीन विकसीत मानव मूल्यों की स्थापना का संकेत कर आनेवाली पीढ़ी का मार्ग निर्धारित किया है, भरतीय जी अंधायुग के माध्यम से जीवन का अवलोकन करना चाहते है जिसका आधार पौराणिक कथानक है जिसे नवीन संदर्भो में व्यक्त किया गया है। अतः अंधा युग के रूप में मर्यादा, सत्य, आस्था की सार्थक अभिव्यक्ति अस्थित्व बोध एवं युग बोध का जीवन के दृष्टि से सम्यक निरूपण तथा समाज में नारी का मूल्यांकन एवं व्यक्ति के धारणाओं आदि की दृष्टि से समर्थ कृति स्वीकार किया जा सकता है। विशेषकर मानव अस्थित्व एवं युग सत्य का यथार्थ प्रकटीकरण करने में नाटकार की सफलता अद्वितीय है।

सहायक ग्रंथ

अंधा युग - धर्मवीर भारती